पुरस्कार व्याख्यान

अल्फ्रेड नोबेल की स्मृति में व्याख्यान, 09 दिसम्बर, 1992

जीवन को देखने का किफायती नजरिया

गैरी एस. बेकर, अर्थशास्त्र विभाग, शिकागो विश्वविद्यालय, शिकागो

1. आर्थिक उपगमन

ऐसे सामाजिक विषयों का विश्लेषण करने के लिए जिनका क्षेत्र उनसे अलग है जिनपर सामान्यत; अर्थशास्त्री विचार करते हैं, मेरा अनुसन्धान सामन्यत: आर्थिक उपगमन का प्रयोग करता है। भाषण में उपगमन का वर्णन किया जाएगा और उदाहरणों के साथ इसे सचित्र बनाया जाएगा जिन्हें गत और वर्तमान रचनाओं से लिया गया है।

मार्क्सवादी विश्लेषण की तरह न होते हुए, जिस आर्थिक उपगमन का मैं उल्लेख करता हूँ उसमें यह नहीं माना जाता कि व्यक्ति मुख्यत: स्वार्थ या लाभ से ही प्रेरित होते हैं। यह विश्लेषण का एक तरीका है और विशेष प्रेरणाओं के बारे में कोई पूर्वधारणा नहीं है। अन्य के साथ मैनें भी अर्थशस्त्रीयों को निजी स्वार्थ के बारे में संकीर्ण पूर्वधारणाओं से अलग ले जाने की कोशिश की है। व्यवहार मानों और अधिमानों के बड़े समृद्ध सैट द्वारा चलित होता है।

इस विश्लेषण में यह कल्पना की गई है कि व्यक्ति कल्याण, जैसा कि वे देखते हैं, उच्चतम सीमा तक बढ़ाने की कोशिश करते हैं चाहे वे स्वार्थी हों या स्वार्थहीन, निष्ठावान, द्वेषपूर्ण, या परपीड़िक हों। उनका व्यवहार आगे की ओर देखता है और यह अधिसमय संगत भी है।

विशेषत: वे अपने कर्मों के अनिश्चित परिणामों का पूर्वानुमान यथासंभव अच्छे ढंग से लगाने की कोशिश करते हैं। तथापि, उनके आगे की ओर देखने वाले व्यवहार की जड़ें अब भी भूतकाल से जुड़ी हो सकती हैं क्योंकि भूतकाल हमारे रूझानों और मानों पर एक लंबा साया डाले रहता है।

हमारी क्रियाएं आय, समय और परिगणन क्षमता और अन्य सीमित स्रोतों और अर्थव्यवस्था और कहीं उपलब्ध अवसरों से भी बाधित होती हैं। ये अवसर मौटे तौर पर अन्य व्यक्तियों और संगठनों के निजी और सामूहिक व्यवहारों द्वारा निर्धारित होते हैं।

विभिन्न स्थितियों के लिए भिन्न बाधाएं निर्णायक होती हैं, लेकिन सबसे मूलभूत बाधा सीमित समय की है। अर्थव्यवस्था और चिकित्सा में उन्नति से आयु की लंबाई बहुत बढ़ गई है, लेकिन समय का मौलिक प्रवाह नहीं बढ़ा जो हर किसी को प्रतिदिन चौबीस घंटों के लिए सदा सीमित कर देता है। इस प्रकार जबकि धनवान देशों में वस्तुओं और सेवाओं में बहुत विस्तार हुआ है लेकिन खपत करने के लिए उपलब्ध कुल समय में नहीं हुआ।

इस प्रकार धनी देशों और निर्धन देशों में जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं जबकि वस्तुओं की बढ़ती हुई बहुतायत से अतिरिक्त वस्तुओं का मान कम हो जाएगा लेकिन जैसे-जैसे वस्तुओं की बहुतायत होती जाती है समय ज्यादा कीमती बन जाता है। कल्पना-लोक में उपयोगिता को अधिकतम स्तर तक ले जाना संगत नहीं है जहां हर एक की जरूरतें पूरी तरह से पूर्ण होती हैं लेकिन समय का सतत प्रवाह ऐसे कल्पना-लोक को असंभव बना देता है। ऐसे कुछ विषयों का विश्लेषण बेकर (1965) और लिंडर (1970) में किया गया है।

निम्नलिखित खंडों में आर्थिक पहुंच को चार प्रकार के बहुत ही भिन्न विषयों में दर्शाया गया है। अल्पसंख्यकों के विरूद्ध भेदभाव को समझने के लिए यह जरूरी है कि तरजीहों को बढ़ाया जाए और विशेष समूहों के पूर्वाग्रहों और घृणा को स्थान दिया जाए। अपराध के आर्थिक विश्लेषण में संगत व्यवहार अवैध और अन्य समाज विरोधी कार्यों को शामिल किया गया है। मानव पूंजीगत पहुंच में विचार किया गया है कि शिक्षा, हुनरों और ज्ञान में पूंजीनिवेश द्वारा बाजार और गैर-बाजारीय स्थितियों आदमियों की उत्पादकता कैसे बदल जाती है। परिवार के लिए आर्थिक उपगमन में विवाह, तलाक, जननशीलता और परिवारिक सदस्यों के बीच संबंधों की उपयोगिता को अधिकतम बनाने वाले अग्रवर्ती व्यवहार के चश्मों के माध्यम से देखा जाता है।

2. अल्पसंख्यकों के विरुद्ध भेदभाव

बाहरी लोगों के प्रति भेदभाव सदा बना रहा है, लेकिन महिलाओं के नियोजन पर कुछ वार्तालापों को छोड़कर (देखें एजवर्थ (1992) और फासेट (1918) अर्थशास्त्रियों ने इस विषय पर 1950 के दशक के पहले बहुत ही कम लिखा। जब मैं स्नातक में था तो मैं नस्लीय, धार्मिक और लिंग भेदभाव के बारे में चिन्तित था और विशेष समूहों के सदस्यों के प्रति पूर्वाग्रह और शत्रुता के अपने नजरिये को व्यवस्थित करने के लिए भेदभाव के सहकारी कारणों का प्रयोग किया।

नियोजक आय कल्पनाएं बनाने की बजाय केवल कर्मचारियों की उत्पादकता को ही समझते हैं, कामगार उनकी विशेषताओं की अनेदखी करते हैं जिनके साथ वे काम करते हैं

और ग्राहकों को केवल माल और उपलब्ध करायी सेवाओं की गुणवत्ताओं के बारे में ही चिन्ता होती है, भेदभाव के सरकारी कारणों में नस्ल, लिंग, रुचि और रूझानों पर अन्य व्यक्तिगत विशेषताओं के प्रभाव को शामिल किया जाता है। कर्मचारी किसी महिला या अश्वेत के अधीन काम करने से इनकार कर सकते है जबकि उन्हें काम के लिए अच्छा वेतन मिलता है या कोई ग्राहक अश्वेत कार सेल्समैन के साथ संव्यवहार न करने को तरजीह दे सकता है। लेकिन सामान्य कल्पनाओं को बढ़ाने से ही यह संभव होगा कि अल्प संख्यकों को पेश आने वाली प्रगति की बाधाओं को समझा जाए।

संभाव्यतः, मजदूरी और नियोजन में अल्पसंखकों के विरुद्ध दिखाई देने वाला भेदभाव, भेदभाव के लिए रुचि पर ही निर्भर नहीं किया जाता बल्कि अन्य भेदकों पर भी निर्भर करता है। जैसे प्रतिस्पर्धा की मात्रा और नागरिक अधिकार कानून। तथापि, एडम स्मिथ द्वारा रचित क्षतिपूरक भेदकों के महत्वपूर्ण सिद्धांत और सायरडेल अमेरिकन डिलिमा (1944) जैसे कुछ मुख्य अध्ययनों को छोड़, 1950 के दशक में और कुछ उपलब्ध नहीं था जिसके आधार पर विष्लेषण किया जाए कि पूर्वाग्रह और अन्य चर कैसे परस्पर व्यवहार करते हैं। मैंने इस सिद्धांत पर काम करने में कई वर्ष लगाए कि आय और नियोजन में वास्तविक भेदभाव के लिए रुचियों, और इसके साथ श्रम और उत्पाद बाजारों में प्रतिस्पर्धा की मात्रा, बहुसंख्यक समूह के सदस्यों में भेदभाव सहकारी तत्वों के वितरण, शिक्षा और प्रशिक्षण तक अल्पसंख्यकों की पहुंच, मध्यम वोटर का और अन्य वोंटिंग यन्त्रावलियों का परिणाम ही निर्धारित करता है कि कानून अल्पसंख्यकों के पक्ष में है या

विरोध में और अन्य बातों द्वारा कैसे निर्धारित करते है। चूंकि इस क्षेत्र में काम करने के लिए बहुत कुछ था, मेरे सलाहकारों ने मुझे प्रोत्साहित किया कि डॉक्टरी के शोधप्रबन्ध (बेकर 1955) को पुस्तक में बदल दूं (बेकर 1957)।

अल्पसंख्यक समूह के विरुद्ध बाजार स्थल में वास्तविक भेदभाव नियोजको, कामगारों, उपभोक्ताओं, स्कूलों और सरकारों के संयुक्त भेदभाव पर आश्रित होता है। विश्लेषण से पता चलता है कि कई बार वातावरण बहुत हद तक नर्म कर देता है और अन्य समय पर किसी दत्त मात्रा के प्रभाव को यह बढ़ाता है। उदाहरणार्थ, समान रूप से उत्पादक अश्वेतों और श्वेतों या महिलाओं और पुरुषों के बीच मजदूरी में अन्तर अश्वेतों और महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह की मात्रा की तुलना में कम होगा जबकि बहुत-सी कंपनियां मुख्यत: अश्वेतों और महिलाओं को नौकरी देने में कुशल रूप से विषेज्ञता प्राप्त हैं।

वास्तव में, ऐसे विश्व में जहां लगातार उत्पादन स्केल के अनुसार उत्पादन होता है दो अलग-अलग अर्थव्यवस्थाएं जिनमें हुनरों का समान वितरण है वे भेदभाव को पूरी तरह से दरकिनार कर देंगी और अन्य स्त्रोतों के लिए समान मजदूरी और समान उत्पादन रखेंगी, इस बात का लिहाज किए बिना कि अलग किए गए अल्पसंख्यकों के विरुद्ध भेदभाव करने की वे इच्छा रखते हैं। इसलिए बाजार स्थल में बहुसंख्यकों द्वारा भेदभाव प्रभावी होता है क्योंकि अल्पसंख्यक सदस्य कंपनियों का पर्याप्त मात्रा में विभिन्न हुनर उपलब्ध नहीं करा सकते जो इन कामगारों का इस्तेमाल करने में विशिष्टता रखते हैं।

जब अल्पसंख्यकों की तुलना में बहुसंख्यक बहुत अधिक हैं:-

यूनाइटेड स्टेटस में अश्वेतों की तुलना में श्वेत गिनती में नौ गुणा से अधिक हैं और अश्वेतों की तुलना में प्रतिव्यक्ति बहुत अधिक मानव और भौतिक पूंजी रखते हैं- बहुसंख्यकों द्वारा बाजार भेदभाव से उनकी आय में शायद ही कमी आती है लेकिन इससे अल्पसंख्यकों की आय में बहुत कमी हो जाएगी। तथापि जब अल्पसंख्यक कुल सदस्यों के काफ़ी बडे भाग में हैं तो बहुसंख्यकों द्वारा भेदभाव उन्हें भी हानि पंहुचाता है।

दक्षिण अफ़ीका में भेदभाव का विश्लेषण करते हुए इस प्रस्ताव को दर्शाया जा सकता है, जहां श्वेतों की तुलना में अश्वेत चार-पांच गुणा अधिक हैं। अश्वेतों के प्रति भेदभाव से श्वेतों को भी काफी हानि हुई है भले ही कुछ श्वेत समूहों को फ़ायदा रहा है। देखें बेकर (1971 – पृष्ठ 3021) और हट (1964)। श्वेतों को भारी कीमत चुकानी पड़ी और इससे पता चलता है कि अफ्रीकी भेदभाव के प्रजाति-पश्चिम और अन्य घोर रूप कैसे भंग होगा।

इस विषय पर साहित्य विकसित हुआ है कि क्या लंबी अवधि में बाजार स्थल से पूर्वाग्रह के कारण भेदभाव समाप्त हो जाएंगे? क्या जो नियोजक भेदभाव नहीं चाहते अन्ततः सब भेदभाव रखने वाले नियोजकों को पीछे छोड़ देंगे। यह संभावित नियोजकों में विभेद के लिए रूचियों के वितरण पर ही निर्भर नहीं होगा बल्कि क्रान्तिक रूप से फर्म उत्पादन कार्यों के प्रकार पर भी निर्भर होगा।

अनुभव सिद्ध अधिक महत्व कर्मधारियों और ग्राहकों द्वारा लंबी-अवधि भेदभाव है जो नियोजकों की तुलना में बाजार भेदभाव के अधिक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। यह उम्मीद करने के कोई कारण नहीं है कि लंबी अवधि में इस समूहों द्वारा भेदभाव समाप्त हो जाएगा जब तक

कि यह संभव न हो कि पर्याप्त कुशल पृथककृत फर्में और वस्तुओं के लिए प्रभावी ढंग से पृथककृत बाजार हों।

हाल ही के वर्षों में एक नवीन सैद्धांतिक विकास हुआ है और वह है रूढ़िबद्ध दलील या सांख्यिकीय भेदभाव के परिणामों का विश्लेषण (देखें केल्पस, 1972 और ऐरो, 1973)। इस विश्लेषण से पता चलता है कि नियोजकों, अल्पसंख्यक सदस्य कम उत्पादकारी हैं स्वत:पूर्ण हो सकता है क्योंकि इन विश्वासों के कारण अल्पसंख्यक सदस्य शिक्षा, प्रशिक्षण और कार्य प्रवीणताओं जैसे समय पाबन्दी में थोड़ा निवेश करेंगे। न्यून निवेश निश्चित उन्हें कम उत्पादनकारी बना देगें (लौरी 1972 का हाल ही में एक अच्छा विश्लेषण देखें)।

गत 25 वर्षों में आय, बेरोजगारी, और अश्वेतों के पेशे, महिलाओं, धार्मिक समूहों, आप्रवसियों और अन्य के बारे में बहुत से साक्ष्य बहुत अधिक बढ़ गए हैं। यह साक्ष्य पूरे तरीके से अल्पसंख्यकों की आर्थिक स्थिति को पूरी तरह से प्रलेखित करता है और बताता है कि विभिन्न वातावरणों में वह कैसे बदलती है। तथापि, इस साक्ष्य ने अल्पसंख्यकों के निम्नतर आय के स्रोत पर कुछ विवादों को समाप्त नहीं किया है (देखें केन, 1986, का सैद्धांतिक साहित्य और अनुभवसिद्ध विष्लेषण दोनों की अच्छी समीक्षा)

3. अपराध और सज़ा

आर्थिक सिद्धांत में एक विद्यार्थी की मौखिक परीक्षा के लिए कोलम्बिया विश्वविद्यालय तक गाड़ी चलाने के बाद मैं 1960 के दशक में अपराध के बारे में सोचने लगा। मुझे देर हो गयी थी और शीघ्र ही निर्णय लेना था कि क्या कार को पार्किंग स्थल पर रखूं या जोखिम उठाऊं

और गली में अवैध पार्किंग के लिए टिकट खरीदूं। मैंने टिकट प्राप्त करने के बारे में सोचा कि जुर्माना क्या होगा और लाट में कार रखने पर क्या खर्च आयेगा? मैंने फैसला लिया और गली में पार्क करने के लिए अदायगी की (मैंने टिकट प्राप्त नहीं किया)।

जब परीक्षण कक्ष में जाने के लिए मैं कुछ ब्लाकों तक चला मुझे ऐसा लगा कि नगर अधिकारियों ने भी शायद वैसा ही विश्लेषण किया है। पार्क किए गए वाहनों का वे बार-बार निरीक्षण कर रहे थे और कानून भंजक पर अधिरोपित जुर्माना का साइज उनके अनुभाग पर आधारित होगा कि मेरे जैसे संभावित भंजकों ने क्या अनुमान लगाया है। बेशक मजबूर विद्यार्थी के सामने मैंने पहले प्रश्न रखा कि अपराधियों और पुलिस दोनों के इष्टतम व्यवहार परकलित करे जो मैंने अब तक नहीं किया था।

1950 और 1960 के दशकों में अपराध पर बौद्धिक विचार विमर्श में यह राय प्रबल थी कि आपराधिक व्यवहार (मानसिक रोग और सामाजिक उत्पीड़न) के कारण होता है और अपराधी लाचार "शिकार है"। एक सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानी की पुस्तक का नाम था सज़ा का अपराध (देखें मेनिंगर, 1996) ऐसी अभिरूचियों का सामाजिक नीति पर बड़ा प्रभाव हुआ क्योंकि कानूनों को बदला गया और अपराधियों के अधिकार शामिल किए गए। इन परिवर्तनों से अपराधियों में भय और दोषसिद्धि में कमी हुई है और कानून को मानने वाली जनता को कम सुरक्षा उपलब्ध कराई गई।

मैं इस धारणा के प्रति सहानुभूति नहीं रखता था कि अपराधियों के अन्य लोगों से भिन्न प्रेरणाएं होती है। सैद्धांतिक और अनुभवसिद्ध धारणा के होते हुए कि अपराधी का व्यवहार

युक्तिसंगत होता है। मैंने छानबीन की (देखें बेंथम 1931, और बेक्कारिया, 1986 द्वारा पहले पथ प्रदर्शक कार्य) लेकिन पुनः "युक्तिसंगतता" का अर्थ आवश्यक रूप से संकीर्ण भौतिकवाद नहीं था। इसमें माना गया कि बहुत से लोग भौतिकता और सदाचार से निरूद्ध होते हैं। और अपराध नहीं करते भले ही जब उन्हें लाभ मिलना था और पकड़े जाने का भय नहीं था।

यदि हर समय ऐसा रूझान बना रहे तो पुलिस और जेलें अनावश्यक हो जाएंगी। युक्तिसंगतता से विवक्षित है, कुछ व्यक्ति अपराधी बन जाते हैं क्योंकि कानूनी कार्य की तुलना में भय और दोषसिद्धि और सज़ा की कड़ाई की संभावना को ध्यान में रखते हुए अपराध से वित्तीय पुरस्कार मिलता है।

अपराध की मात्रा को न केवल भावी अपराधियों की युक्तिसंगतता और तरजीह द्वारा निर्धारित किया जाता है बल्कि सरकारी नीतियों द्वारा उत्पन्न आर्थिक और सामाजिक वातावरण द्वारा भी, इसमें पुलिस पर व्यय, भिन्न अपराधों के लिए सजाएं और नियोजन के लिए अवसर, स्कूल जाना और प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं। स्पष्ट है कि उपलब्ध कानूनी नौकरियों के प्रकार और कानून-व्यवस्था तथा सजा अपराध के प्रति आर्थिक पहुंच के अभिन्न अंग हैं।

गणितीय रूप से प्रत्याशित सजा को अपरिवर्तित रखते हुए, सिद्धदोषियों की सजा में पर्याप्त वृद्धि करके अपराधियों को पकड़ने के लिए खर्च में कटौती को निष्प्रभाव करके इनके अपराधों पर सार्वजनिक खर्च को कम किया जा सकता है। तथापि, जोखिम उठाने वाले

व्यक्ति कड़ी सजा की तुलना में दोषसिद्धि की उच्चतर संभावना द्वारा अपराध से ज्यादा डरते हैं। इसलिए, राज्य द्वारा इष्टतम व्यवहार द्वारा सजा की कम निश्चितता के लिए जोखिम को तरजीह देने वाले अपराधियों की तरजीह के विरुद्ध दोषसिद्धि की संभावना को कम करने से पुलिस और न्यायालयों से घटा देने की संभावना के बारे में भी सोचना चाहिए।

अपराध पर मेरे कार्य के आंरभिक चरणों में मैं बड़बड़ा जाता था कि चोरी सामाजिक रूप से हानिकारक क्यों हैं क्योंकि ऐसा लगता है कि यह तो सामान्यत: अमीरों से गरीब लोगों में संसाधनों का मात्र पुन: बांटना है। मैंने इस पहेली को यह मानते हुए हल किया कि अपराधी हथियारों और अपने अपराधों की योजना बनाने और क्रियान्वयन करने में समय के मान पर खर्च करते हैं और यह व्यय सामाजिक रूप से अनुत्पादक है- यह है जिसे अब ''किराया मांगना'' कहते हैं-क्योंकि इससे धन की उत्पति नहीं होती लेकिन उसे जबर्दस्ती पुन: बांटा जाता है (बेकर, 1968)। चोरी की सामाजिक लागत का अनुमान चोरी किए गए डालरों की संख्या से लगाया जाता था क्योंकि विवेकी-अपराधी अपने अपराधों पर उस राशि तक खर्च करने के लिए तैयार होगा। (मुझे संसाधनों को जोड़ना चाहिए था जिसे संभावित शिकारों ने अपराध के विरुद्ध अपनी रक्षा पर खर्च किया था)।

अपराध के लिए आर्थिक पहुंच इतनी प्रभावशाली क्यों बन गई, इसका एक कारण यह है कि न्यूनतम मजदूरी कानून, वायु अधिनियम, अंतरंगी व्यापार और सुरक्षा कानूनों के अन्य उल्लंघन और आय का अपवंचन सहित सभी कानूनों को लागू करने के अध्ययन के लिए एक ही विश्लेषिक यन्त्र का प्रयोग किया जा सकता है। चूंकि कुछ कानून स्वत: प्रवर्तित होने

वाले है उन्हें दोषसिद्धि और सजा खर्च की जरुरत होती है ताकि भंजकों को भय दिखाकर रोका जाए। यूनाइटेड स्टेटस दंडादेष आयोग ने फेडरल कानूनों के भंजकों को सजा देने के लिए न्यायाधीशों द्वारा पालन के लिए नियम बनाने के लिए अपराध के आर्थिक विश्लेषण का स्पष्ट रूप से उपयोग किया है। (यूनाइटेड स्टेटस दंडादेष आयोग, 1988)

ऐसे अपराधों के अध्ययन गत चौथाई शताब्दी के दौरान आम हो गए हैं जहां आर्थिक पहुंच का प्रयोग किया गया है। इसमें अपराधों की प्रचंडता में वृद्धि को रोकने के लिए इष्टतम उपांतिक सजाओं के विश्लेषण शामिल है- उदाहरणार्थ, अपहरणकर्ता को अपने शिकार का वध करने से रोकना। आधुनिक साहित्य स्टिगलर (1970) और कानून के प्राईवेट और सार्वजनिक पालन के बीच संबंध (देखें बेकर और स्टिगलर, 1974 और लैंडेस और पोसनर, 1975) के साथ आरंभ होता है।

कैद और अन्य प्रकार की सजा पर जुर्मानों को तरजीह दी जाती है क्योंकि वे अधिक कुशल होते हैं। अपराधियों को जुर्माने के रूप में सजा राज्य के लिए राजस्व है। जुर्मानों और अन्य सजाओं के बीच संबंध के पहले वार्तालाप का स्पष्टीकरण दिया गया है और काफी सुधार दिया गया है। (देखें पोलिंस्की और शेवेल, 1984 और पोस्नेर, 1986)

कारावास अवधियों, दोष सिद्धि दरों, बेरोजगारी स्तरों, आय की असमानता और अन्य चरों के अपराध दरों पर प्रभावों के अनुभव सिद्ध मूल्यांकन बहुत अधिक और बहुत सही हो पाये हैं। (अग्रगामी रचना ईहरलिच, 1973)। सबसे बड़े विवाद इस प्रश्न के बारे में है कि क्या मृत्युदंड हत्याओं को रोकता है यह ऐसा विवाद है जो हल होने का नाम ही नहीं लेता। (देखें

इहरलिच, 1975 और नेशनल रिसर्च काउंसल, 1978)

4. मानव पूंजी

1950 के दशक तक यह सामान्यत: माना जाता था कि श्रमिक शक्ति दी जाती है और संवर्धनीय नहीं होती। एडम स्मिथ, अफ्रेड मार्शल, और पिल्टन फ़टीडमैन द्वारा शिक्षा और अन्य प्रशिक्षण में पूंजी निवेश के परिष्कृट विश्लेषणों उत्पादकता की परिचर्चाओं में समाकलित नहीं किया गया था। तब टी. डब्ल्यू. शुल्ज और अन्य ने आर्थिक विकास और संबंधित आर्थिक प्रश्नों के लिए मानव पूंजी निवेशों की की छानबीन का मार्ग प्रशस्त करना आरंभ किया।

पूंजी निवेश विश्लेषण इस कल्पना के साथ आरंभ होता है कि व्यक्ति लाभों और लागतों का नाप तोल करके अपनी शिक्षा, प्रशिक्षण, चिकित्सा देख-रेख और विद्या तथा स्वास्थ्य ये अन्य वृद्धियां करता है। लाभों में शामिल आय और व्यवसायों में सुधार के साथ-साथ सांस्कृतिक और अन्य गैर-धन विषयक फ़ायदे शामिल होते हैं जबकि लागतें सामान्यत: इन निवेशों पर खर्च समय के छोड़े गए मान पर मुख्यत: निर्भर करती हैं।

मानव निवेश अब इतना विवाद - रहित है कि यह मुश्किल है कि इस पहुंच के प्रति, जो पद के साथ थी, 1950 और 1960 के दशकों की शत्रुता को आंकना कठिन है। मानव पूंजी की संकल्पना ही अप्रतिष्ठित मानी जाती थी क्योंकि यह मनुष्यों को मशीनों के रूप में मानती थी।

स्कूलिंग उपगमन सांस्कृतिक अनुभव न होकर एक पूंजी निवेश था और इसे

असुविधाजनक और अत्यंत संकीर्ण माना गया। इस प्रकार अपनी पुस्तक को ह्यूमन कैपिटल नाम देने के निर्णय से पहले मुझे बहुत हिचकिचाहट हुई और एक लंबा उपशीर्षक देते हुए जोखिम से बचाव किया। धीरे-धीरे अर्थशास्त्रियों ने दूसरों की बात छोडे, विभिन्न आर्थिक और सामाजिक विषयों के विश्लेषण में एक लाभकारी औज़ार के रूप में इसे स्वीकार किया।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों में पूंजी निवेश से पुरुषों, महिलाओं, अश्वेतों और अन्य समूहों को आय के निजी और सामाजिक दरों को परिकलित करने के प्रयास के साथ मानव पूंजी पर मेरा कार्य आरंभ हुआ। कुछ समय के बाद यह स्पष्ट हो गया कि मानव निवेश का विश्लेषण श्रम बाजारों और कुल मिलाकर अर्थव्यवस्था में बहुत-सी नियमितताओं को स्पष्ट करने में सहायता दे सकता है। यह संभव प्रतीत हुआ कि मानव पूंजी का अधिक सामान्य सिद्धांत विकसित किया जाए जिसमें फर्मों और व्यक्तियों को शमिल किया जाए जो इसकी मैक्रोइकोनॉमिक विवक्षाओं पर विचार कर सके।

अनुभवसिद्ध विश्लेषण ने अधिक शिक्षित व्यक्तियों की उच्चतर आयों पर डाटा सही करने का प्रयास किया इस बात के लिए कि वे अधिक योग्य हैं: उनके **IQs** उच्चतर हैं और अन्य रूझान परीक्षाओं में उनके अंक बेहतर होते हैं। इसने नश्वरता की शिक्षा, आयकर, छोड़ी हुई आय और आर्थिक विकास के विवरणों की दरों पर प्रभावों पर विचार किया। योग्यता परिशुद्धियां अधिक महत्वपूर्ण नहीं लगीं लेकिन वयस्क मर्त्यता में भारी परिवर्तन और आर्थिक विकास की बड़ी दरों का प्रभाव बड़ा रहा।

मिन्सर के गौरव ग्रन्थ (देखें 1974) से मानव पूंजी में पूंजी निवेश के अनुभवसिद्ध अध्ययन को बहुत बढ़ावा मिला। उसने एक सरल प्रतिगमन विश्लेषण प्रस्तुत किया जिसने आयों को स्कूलिंग के वर्षों से सम्बद्ध किया (बेकर और क्रिसविक, 1966) और जॉब पर प्रशिक्षण और अनुभव के अपरिष्कृत लेकिन बहुत ही लाभकारी उपाय को शामिल किया- स्कूल समाप्ति के वर्षों बाद; समूह डाटा की बजाय उसने बहुत से व्यक्ति प्रेक्षणों का प्रयोग किया और आय उत्पादक समीकरणों में अवशिष्टों की विशेषताओं का उसने ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया। अब बहुत से देशों के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण को वापसी की कई अनुमानित दरें हैं। (इस साहित्य के सारांश के लिए, कृपया देखें **Psacharopoulous,** 1975)।

स्कूलिंग और प्रशिक्षण के आर्थिक लाभों पर संचायक साक्ष्य ने नीति परिचर्चाओं में मानव पूंजी में नीति के महत्व को बढ़ावा दिया। मानव पूंजी में नए विश्वास ने सरकारों के उपाय को पुन: आकार दिया है जिससे वे प्रेरक विकास और उत्पादकता की समस्याओं का हल निकालती हैं जैसा कि हाल ही में यूनाइटेड स्टेट्स में राष्ट्रपति चुनाव में मानव पूंजी पर बल देते हुए दिखाया गया था।

मानव पूंजी विश्लेषणों में सब से अधिक प्रभावशाली सैद्धांतिक संकल्पनाओं में एक है सामान्य और विशिष्ट प्रशिक्षण या ज्ञान के बीच विभेद (देखें बेकर, 1962 और ओआई, 1962)। परिभाषा के रूप में, फर्म-विशिष्ट ज्ञान केवल उन्हीं फर्मों के लिए लाभप्रद है जो उसे उपलब्ध कराती हैं, जबकि सामान्य ज्ञान अन्य फर्मों के लिए भी

लाभदायक है। किसी को आईबीएम कम्पैटेबल पर्सनल कम्प्यूटर ऑपरेट करना सिखाना सामान्य प्रशिक्षण है जबकि किसी विशेष कंपनी में प्राधिकार ढांचे और कर्मचारियों की योग्यताओं के बारे में सीखना विशिष्ट ज्ञान है। इस विभेद से यह स्पष्ट करने में सहायता मिलती है कि उच्च विशिष्ट प्रवीणता प्राप्त कामगारों की अपनी नौकरियां छोड़ने की संभावनाएं क्यों कम होती हैं और व्यापार घाटे के समय वे अन्त में हटाए जाते हैं। इसमें यह भी स्पष्ट होता है कि अधिकांश पदोन्नतियां फर्म के अन्दर से ही क्यों की जाती हैं। बजाय इसके कि किराये पर लिए जाएं- फर्म के ढांचे और ''कलचर'' की जानकारी प्राप्त करने के लिए कामगारों को समय चाहिए- और बेहतर लेखाकरम विधियां अधिकांश कंपनियों की प्रमुख परिसंपतियों में कर्मचारियों की विशिष्ट मानव पूंजी को शामिल करेंगी। फर्म-विशिष्ट पूंजीनिवेशों से भाड़ा उत्पन्न होता है जिसे कर्मचारियों और नियोजकों में बांटा जाना चाहिए, बांटने की यह प्रक्रिया ''अवसरवादियों के व्यवहार के लिए संवेदनशील है क्योंकि जब पूंजी निवेश उपयुक्त होते हैं तो प्रत्येक पक्ष अधिक से अधिक भाड़ा प्राप्त करना चाहता है। संगठनों के आधुनिक आर्थिक सिद्धांत में विशिष्ट पूंजी निवेशों के कारण और प्रिंसिपल-एजेन्ट समस्याओं की बहुत-सी परिचर्चाओं में भाड़ा और अवसरवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (देखें विलियमसन, 1985) (उदाहरणार्थ देखें ग्रासमैन और हार्ट, 1983)। तलाक की दरों और विवाह के भीतर सौदेबाजी को स्पष्ट करने (देखें बेकर, लेडेस और माइकल, 1977 और मैकएलराय और हार्नी, 1981)

और राजनीतिज्ञों के कम व्यवसाय को स्पष्ट करने के लिए (देखें केव, फेरजान और फ़ीरायना, 1987) और विवाह ''बाजारों का विश्लेषण करने के लिए बांट और व्यवसाय के लिए विशिष्ट पूंजी की विवक्षाओं का भी प्रयोग किया गया है।

मानव पूंजी निवेश का सिद्धांत आय में असमानता से लेकर योग्यता, पारिवारिक पृष्ठभूमि और वसीयतों और अन्य परिसंपतियों से संबद्ध होता है (देखें बेकर और टोम्स, 1986)। असमानता के बहुत से अनुभवसिद्ध अध्ययन मानव पूंजी संकल्पनाओं, विशेषत: स्कूलिंग और ट्रेनिंग में भेदों पर निर्भर करते हैं (देखें मिन्सर, 1974)। 1980 के दशक में यूनाइटेड स्टेट्स में आय असमानता में व्यापक विकास ने राजनीति परिचर्चा को प्रेरित किया उसे अधिक शिक्षित और बेहतर प्रशिक्षित को अधिक कमाई से बहुत हद तक स्पष्ट किया गया है। (देखें मर्फ़ी और वैल्श, 1992)।

मानव पूंजी सिद्धांत कमाई में तथाकथित ''लिंग अन्तर'' की उत्तोजक व्याख्या प्रस्तुत करता है। परम्परागत रूप से पुरुषों की तुलना में महिलाओं के अंशकालिक रूप से और रूक-रूक कर काम करने की अधिक संभावना होती है क्योंकि सामान्यत: वे कुछ समय के लिए बच्चे होने पर श्रमशक्ति से हट जाती हैं। इसके फलस्वरूप शिक्षा और प्रशिक्षण, जिसके कारण कमाई और जॉब प्रवीणताओं में सुधार होता है में पूंजी निवेश करने से उनके लिए कम प्रोत्साहन होते हैं।

गत बीस वर्षों में यह सब कुछ बदल गया। परिवार के आकार में कमी, तलाक दरों में वृद्धि, सेवा क्षेत्र का हट फैलाव जहां अधिकांश महिलाओं को नौकरी दी जाती है लगातार आर्थिक

विकास जिससे पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की आय भी बढ़ी, नागरिक अधिकार कानून ने प्रोत्साहित किया कि श्रमशक्ति में महिलाओं की हिस्सेदारी अधिक हो और इस प्रकार बाजार-अभिमुख प्रवीणताओं में अधिक पूंजी निवेश हुआ। व्यवहार्य रूप से सभी धनी देशों, इन बलों ने महिलाओं के पेशों और सापेक्ष कमाई दोनों में बहुत सुधार किया ।

यूनाइटेड स्टेट्स का अनुभव विशेष रूप से अच्छी तरह प्रलेखित है। मध्य पचास से मध्य सत्तर के दशकों में पूर्णकालिक पुरुषों और महिलाओं के आय में लिंग अंतर लगभग 35 प्रतिशत रहा। महिलाओं ने लगातार आर्थिक उन्नति आरंभ की जो अब भी जारी हैं; इसने अन्तर को 25 प्रतिशत के नीचे कर दिया। महिलाओं के झुण्ड व्यापार कानून, चिकित्सा स्कूलों में उजागार है और कुशल रोजगारों पर लगी हुई हैं जिससे वे पहले घृणा करती थी या जिनसे उन्हें बाहर रखा जाता था।

शुल्ज और अन्य (देखें शुल्ज, 1963 और डेनीसन, 1962) ने पहले इस बात पर बल दिया कि मानव पूंजी में निवेश आर्थिक विकास में बड़ा सहयोगी है। लेकिन कुछ समय के बाद मानव पूंजी के विकास से नाते की अनदेखी की गई क्योंकि अर्थशास्त्री-इस बात पर हतोत्साहित हो गए कि क्या उपलब्ध विकास सिद्धांत ने भिन्न देशों की उन्नति को बहुत-सी अन्तर्दष्टियां दीं। अन्तर्जात विकास के अधिक औपचारिक मॉडलों के पुनर्जीवन के कारण एक बार फिर मानव पूंजी परिचर्चाओं में आ गई है।

(देखें रोमर, 1986, लूकास, 1988, बारों और सलाय मार्टिन, 1992 और बेकर, मर्फी और तामूरा, 1990)

5. परिवारों का गठन, विघटन और ढांचा

परिवार व्यवहार का युक्तिसंगत चयन विश्लेषण, व्यवहार, मानव पूंजी में निवेशों, समय आबंटन और महिलाओं और अन्य समूहों के विरूद्ध भेदभाव को उच्चतम सीमा तक बढ़ाने पर निर्मित होता है। भाषण के शेष हिस्से में इस विश्लेषण पर पूरा ध्यान दिया गया है क्योंकि यह अब भी काफी विवादास्पद है।

ए ट्रीटाइज़ आन दि फैमीली लिखना मेरे लिए अत्यन्त कठिन बौध्दिक प्रयास था जो मैंने हाथ में लिया। तार्किक तौर पर परिवार एक अत्यन्त मूलभूत और प्राचीनतम संस्था है-कई लेखकों ने इसकी उत्पत्ति 50,000 वर्ष पहले मानी है। ट्रीटाइज़ में न केवल आधुनिक पश्चिम परिवारों का, अन्य संस्कृतियों और गत कई शताब्दियों में परिवार ढांचे में परिवर्तनों का भी विश्लेषण किया गया है।

इस व्यापक विषय को लेने के लिए छह वर्ष से अधिक समय की बौद्धिक वचनबद्धता अपेक्षित थी और कई रातों और दिनों के कार्य से मैं बौद्धिक और भावनात्मक रूप से थक गया था। अपनी आत्मकथा में बर्टरेंड रस्सल कहते हैं कि प्रिंसीपिया मैथमेटिका लिखने में इस बौद्धिक शक्तियां इतनी खर्च हो गईं कि ट्रीटाइज़ खत्म करने के बाद बौद्धिक उत्साह पुन: प्राप्त करने में मुझे लगभग दो वर्ष लग गए।

जननक्षमता के विश्लेषण का अर्थशास्त्र में लंबा और प्रतिष्ठित इतिहास है, लेकिन हाल के वर्षों तक विवाह और तलाक, पतियों, पत्नियों, माँ-बाप और बच्चों के आपसी संबंधों की अर्थशास्त्रियों ने मुख्यत: उपेक्षा की थी (मिन्सर, 1962 का महत्वपूर्ण अध्ययन देखें)।

परिवार पर मेरी रचना इस बिन्दु पर इस धारणा पर अलग थी कि जब महिलाएं और पुरुष शादी करने, माँ बच्चे पैदा करने या तलाक का फैसला करते हैं तो वे लाभों और लागतों की तुलना करते हुए अपनी उपयोगिता को अधिकतम बनाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार वे शादी करते हैं जब उन्हें आशा होती है कि अकेले रहने की बजाय इससे उनका जीवन अच्छा हो जाएगा और अपनी बेहतरी को बढ़ाने की आशा से ही वे तलाक लेते हैं।

जो लोग बुद्धिजीवी नहीं है वे हैरान हो जाते हैं जब उन्हें बताया जाता है कि यह पहुंच विवादास्पद है क्योंकि उन्हें यह स्पष्ट लगता है कि लोग विवाह और तलाक से अपनी बेहतरी बढ़ाना चाहते हैं। विवाह और अन्य व्यवहार की युक्तियुक्त पसन्द उपगमन वास्तव में बहुधा आम आदमी के सहज अर्थशास्त्र के अनुकूल होती है। (फैरल और मेंडल, 1992)।

फिर भी व्यवहार के बारे में सहजानुमूल धारणा क्रमबद्ध विश्लेषण का केवल आरंभिक बिन्दु है क्योंकि वे अकेले ही बहुत-सी रुचिकर विवक्षाएं उत्पन्न नहीं करते। युक्तियुक्त चयन उपगमन उन्हें एक ढांचे में लगा देती है जिसमें विवाह और तलाक बाजारों के विष्लेषण के श्रम का विशिष्टीकरण और बांट, वृद्ध आयु सहायता, बच्चों में पूंजी निवेश और परिवारों का प्रभावित करने वाले कानून के साथ व्यवहार का अधिकतम सीमा तक ले जाना शामिल होता है। पूर्ण मॉडल की विवक्षाएं बहुधा इतनी स्पष्ट नहीं होतीं और कई बार प्राप्त राय के बिलकुल उलट चलती हैं।

उदाहरणार्थ, धनवानों के बीच आम विश्वास के विपरीत, परिवार निर्णयों का आर्थिक विश्लेषण बताता है कि गरीब जोड़ों की तुलना में अमीर जोड़ों द्वारा तलाक लेने की संभावना

कम होती है। इस सिद्धांत के अनुसार, शादीशुदा बने रहने से अमीर जोड़ों को बहुत कुछ प्राप्त होता है जबकि बहुत से गरीब जोड़ों के लिए ऐसा नहीं होता। एक ग़रीब स्त्री सन्देह कर सकती है कि क्या लगातार बेरोजगार रहने वाले के साथ शादी का निर्वाह करने का कोई लाभ है। बहुत से देशों के लिए अनुभवसिद्ध अध्ययनों में यह अवश्य बताया गया है कि अमीर जोड़ों के विवाह बहुत अधिक स्थायी होते हैं। (देखें बेकर, लेंडस और माइकल, 1977) पतियों और पत्नीयों के बीच कुशल लेन-देन का अर्थ है कि गत दो दशकों के दौरान यूरोप और यूनाइटेड स्टेट्स में शून्य-दोष में रूझान से तलाक दर में वृद्धि नहीं होगी और इसलिए बहुत से दावों के विपरीत यह इन दरों तेजी से हो रही वृद्धि के लिए यह उत्तरदायी नहीं है। तथापि सिद्धांत से यह तो पता चलता है कि शून्य-दोष तलाक से बच्चों वाली महिलाओं को चोट पहुंचती है जिनके विवाह उनके पतियों द्वारा भंग किए जाते हैं। यूनाइटेड स्टेट्स और अन्य उन्नत देशों में बच्चों वाले सभी घरानों के लगभग पांचवां भाग ऐसे घरानों वाला है जहां बच्चों वाली अविवाहित महिलाएं रहती हैं।

मालथस के प्रसिद्ध निबन्ध के बाद से जननक्षमता का अध्ययन करने के लिए व्यवहार के आर्थिक माडलों का प्रयोग किया गया है; महान स्वीडिश अर्थशास्त्री, नुटविकसेल अधिक शताब्दी के मालथस पूर्वकथनों में विश्वास के कारण अर्थशास्त्र की ओर आकृष्ट हुआ। लेकिन 10वीं शताब्दी के अंतिम भाग में और इस शताब्दी के आरंभ में जब कुछ देश औद्योगिक बन गए तो जन्म दर में भारी गिरावट के कारण मालथस के निष्कर्ष का खण्डन हो गया कि आमदनियों के बढ़ने और कम होने के साथ जननशक्ति में उत्थान और पतन होगा।

मालथस से जननक्षमता के साल मॉडल के विफल होने पर अर्थशास्त्री सहमत हुए कि परिवार-आकार निर्णय अर्थशास्त्र की परिधि से बाहर हैं। नव-क्लासिकल विकास मॉडल में यह विश्वस प्रतिबिम्बित होता है क्योंकि बहुत से रूपांतरों में यह जनसंख्या वृद्धि को बहिर्जात और दत्त मानता है (देखें, उदाहरणार्थ, कैस, 1965 या ऐरो और कुरज़, 1970)। तथापि मालथस पहुंच के साथ परेशानी यह नहीं है कि स्वत: अर्थशास्त्र का प्रयोग करती है बल्कि आयुनिक जीवन के लिए ऐसा अर्थशास्त्र है जो अनुपयुक्त है। यह इस बात की उपेक्षा करता है कि जैसे-जैसे देश अधिक उत्पादक बनते जाते हैं, बच्चे की देख-रेख पर लगा समय अधिक खर्चीला बन जाता है। समय के उच्चतर मान से बच्चों का खर्च बढ़ जाता है और इससे बड़े परिवारों के लिए मांग घट जाती है। वह इस बात पर विचार करने में भी विफल होता है कि औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं में शिक्षा और प्रशिक्षण का ज्यादा महत्व माँ-बाप को प्रोत्साहित करता है कि वे अपने बच्चों की प्रवीणताओं में अधिक धन लगायें जिससे बडे परिवारों का खर्च भी बढ़ जाता है। समय का वर्धित मान और स्कूलिंग पर बढ़े हुए बोझ और अन्य मानव पूंजी जननशक्ति के गिरावट के बारे में बताती है जैसे-जैसे देश विकसित होते हैं जन्म दर कम होती जाती है जिसे आधुनिक अर्थशास्त्र के बहुत से तत्व प्रभावित करते हैं।

ऐसा क्यों है कि लगभग सभी समाजों में विवाहित महिलाएं बच्चे पैदा करने और पाने में और कुछ कृषि कार्य करने में विशेषता रखती हैं जबकि विवाहित पुरुष युद्ध कार्य और बाजार कार्य करते हैं? इसका स्पष्टीकरण, संभवत: पुरुषों और महिलाओं के बीच शारीरिक विभेद

का संयोजन है-विशेषता बच्चे जनने और पालने की उनकी जन्मजात क्षमता हैं-और बाजार कार्यकलापों में महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव, जो अंशत: सांस्कृतिक अनुकूलन के माध्यम से है। जीव-विज्ञान के सापेक्ष महत्व और विवाहों में श्रम की परम्परागत बांट पैदा करने में भेदभाव पर बड़ी और उच्च भावनात्मक राय में अन्तर विद्यमान है (देखें, उदाहरणार्थ, बोसरूप, 1970)

श्रम की इस बांट का आर्थिक विश्लेषण जीव विज्ञान और भेदभाव के सापेक्ष महत्व को निर्धारित नहीं करता, लेकिन इससे पता चलता है कि प्रत्येक में छोटे अन्तरों के लिए यह बांट कितनी संवेदी है। जब हुनर का प्रयोग करने में अधिक समय लगाया जाता है, एक विवाहित युगल श्रम की सुस्पष्ट बांट से बहुत लाभ उठा सकता है क्योंकि पति एक प्रकार के मानव पूंजी में विशिष्टता प्राप्त कर सकता है और पत्नी किसी अन्य में। एक विवाह के बीच विशिष्टकरण से इतना बड़ा लाभ दिए जाने पर महिला के विरुद्ध केवल थोड़ा-सा भेदभाव या बच्चा पालने की प्रवीणता में छोटा जैविकी अन्तर से कुटुम्ब में श्रम की बांट होगी और बाजार के काम लिंग के क्रमबद्ध रूप से संबंधित होंगे। छोटे अन्तरों के प्रति संवेदनशीलता से पता चलता है कि अनुभवसिद्ध साक्ष्य जैविकी और ''सांस्कृतिक'' व्याख्याओं के बीच से आसानी से क्यों नहीं चुन पाता। यह सिद्धांत यह भी बताता है कि महिलाएं श्रम बल में क्यों दाखिल हुई क्योंकि परिवार छोटे हो गए थे, तलाक अधिक आम हो गए थे और महिलाओं के लिए आय के अवसरों में सुधार हुआ था।

परिवार के सदस्य जिन फर्मों के कर्मचारी हैं और जिन संगठनों के सदस्य हैं उनके संबंधों

में मूलभूत अन्तर होगा। पतियों, पत्नियों, माँ-बाप और बच्चों के बीच पारस्परिक क्रियाएं प्रेम, दायित्व, दोषभाव और कर्तव्य भावना से प्रेरित होंगी ऐसी अधिक संभावना है, संकीर्णरूप से प्रस्तुत स्वार्थ से नहीं।

लगभग बीस वर्ष हुए यह दिखाया गया था कि जब सदस्यों के बीच संसाधनों के पुन: वितरण के बारे में सार्वजनिक नीतियों और प्रघातों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है तब परिवारों के बीच परोपकारिता में भारी अन्तर होता है। बेकर (1974) ने दिखाया कि किसी परोपकारी से उसके लाभभोगियों (या इसके विपरीत) को संसाधनों के बहिर्जात पुन: वितरण से किसी का हित प्रभावित नहीं होगा क्योंकि परोपकारी पुन: वितरित राशि के अनुरूप अपने तोहफ़ों को कम करने की कोशिश करेगी। बेरो (1974) ने एक अन्त: प्रजनन संदर्भ में यह परिणाम प्राप्त किया जो आम धारणा पर सन्देह खड़ा करता है कि सरकारी घाटे और संबंधित वित्तीय नीतियों का अर्थव्यवस्था पर वास्तविक प्रभाव पड़ता है। ''रोटन रिड थियोरम'' यह नाम बहुत लोकप्रिय है चाहे आलोचक इसके परिणाम से सहमत नहीं होते-इसमें परोपकार के विश्लेषण को आगे बढ़ाया गया है, क्योंकि यह दिखाता है कि स्वार्थी लोगों का व्यवहार परोपकार से कैसे प्रभावित होता है। कुछ शर्तों के अधीन, बेशक, स्वार्थी लाभभोगी भी, अधिकांश माता-पिता विश्वास रखते हैं कि इसका सर्वोत्तम उदाहरण है परोपकारी माँ-बाप के स्वार्थी बच्चे, इस प्रकार कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं जैसाकि वे अपने उपकारकों के प्रति परोपकारी हैं क्योंकि इससे उनके अपनी स्वार्थी बेहतरी बढ़ा सकते हैं। वे इस प्रकार इसलिए कम कर देंगे कि उनकी हालत खराब हो जाएगी (देखें

बेकर,, 1974 और लिंडबेक और वाईबल (1987) में विष्लेषण के लिए विवधर्न और अर्हता, बर्गस्ट्राम (1989) और बेकर 1991 पृष्ठ 973)।

बाइबल, प्लैटो की रीपब्लिक और अन्य आरंभिक रचनाओं में युवा बच्चों से उनके माँ-बाप का और वृद्ध माँ-बाप से उनके वयस्क बच्चों का व्यवहार। वृद्धों और बच्चों दोनों को देख-रेख की जरूरत है। एक मामले में स्वास्थ्य और ऊर्जा कम होती जाती है और दूसरे में जैविक विकास और निर्भरता के कारण। परिवारों के बीच संबंधों के आर्थिक विष्लेषण की शक्तिशाली विवक्षा यह है कि दोनों मामले काफी करीबी हैं।

ऐसे माँ-बाप जो बड़ी वसीयतें छोड़ते हैं उन्हें वृद्धावस्था में सहायता की जरूरत नहीं होती बल्कि वे तो उल्टे अपने बच्चों की सहायता करते हैं। मैंने पहले इसकी महत्वपूर्ण विवक्षा का उल्लेख किया था; कुछ शर्तो के अधीन, बजट घाटे और वृद्धों के लिए सामाजिक सुरक्षा भुगतान का कोई वास्तविक प्रभाव नहीं होता क्योंकि माँ-बाप बस बडे क़रों को बड़ी वसीयतों के माध्यम से भविष्य में अपनी बच्चों की ओर मोड़ देते हैं।

इस बात की ओर कम ध्यान दिया जाता है कि परोपकारी माँ-बाप जो वसीयतें छोड़ते हैं उनका रूझान भी अपने बच्चों की प्रवीणताओं, आदतों और मानों में अधिक निवेश करना होता है। अपने बच्चों की शिक्षा और प्रवीणताओं में निवेश करके उन्हें लाभ प्राप्त होता है कि उनकी बचतों पर आय की तुलना में अधिक आय होती है। बच्चों में निवेश करके वे अप्रत्यक्ष रूप से वृद्धावस्था के लिए बचत करते हैं, और जब बूढे हो जाएं तो वसीयतों को घटा सकते हैं। माँ-बाप और बच्चे दोनों ही सुखी होंगे जब माँ-बाप सब निवेश बच्चों में करते

हैं जिन पर बचत की तुलना में अधिक आय होती है और तब वसीयतों को पूंजी निवेश के कुशल स्तर तक समायोजित कर देते हैं। धनी देशों में भी कई माँ-बाप वसीयतें छोड़ जाने की योजना नहीं बनाते। इन माँ-बाप को वृद्धावस्था मदद चाहिए और वे अपने बच्चों की शिक्षा और अन्य देख-रेख में ''कम निवेश'' करते हैं। वे इसलिए कम निवेश करते हैं क्योंकि वे वसीयतों को घटा कर बच्चों पर अधिक खर्च के लिए अपनी क्षतिपूर्ति नहीं कर सकते क्योंकि कोई वसीयत छोड़ने की उनकी कोई योजना नहीं है।

बच्चों और माँ-बाप दोनों के लिए बेहतर होगा यदि बच्चों से वचनबद्धता के एवज़ में कि जब जरूरत होगी बच्चे उनकी सहायता करेंगे और माँ-बाप बच्चों के लिए पूंजी निवेश करने के लिए सहमत हो जाएंगे लेकिन ऐसी वचनबद्धता को लागू कैसे किया जा सकता है? अर्थशास्त्री और वकील सामान्यत: एक लिखित करार की सिफ़ारिश करते हैं ताकि वचनबद्धता सुनिश्चित की जा सके। लेकिन यह सोचना बेतुका-सा है कि कोई समाज वयस्कों और किशोरों और 10-वर्षीय बालकों के करारों को लागू करेगा। जब वायदे और लिखित करारें आबद्धकर नहीं हैं तो मेरे वर्तमान अनुसंधान के एक भाग में एक अप्रत्यक्ष मार्ग पर विचार किया गया है कि वचनबद्धता को कैसे उत्पन्न किया जाए। इस नई रचना के कुछ अंश का मैं संक्षेप रूप से वर्णन करंगा क्योंकि यह अज्ञात भूमि तक परिवार के लिए आर्थिक पहुंच लिए हुए है जो परिवारों में तरजीहों के युक्तिसंगत निर्माण से संबंधित है।

माँ-बाप की प्रवृतियों और व्यवहार का बच्चों पर बहुत अधिक प्रभाव होता है। माँ-बाप जो शराबी होते हैं और क्रैक के व्यसनी होते हैं वे अति संवेदनशील बच्चों के लिए एक बेतुका

वातावरण प्रस्तुत करते हैं जहां कि स्थायी गुणों से युक्त माँ-बाप बच्चों को ज्ञान देते हैं और उन्हें प्रेरणा देते। वे बच्चों को प्रभावित करते हैं कि वे क्या बन सकते हैं और वे क्या करना चाहते हैं। आर्थिक उपगमन बचपन के अनुभवों के माध्यम से तरजीहों के निर्माण में अन्तर्दृष्टि का योगदान दे सकती है और इसके लिए जरूरी नहीं कि श्रेष्ठता पर फराड के महत्व को अपनाया जाए कि जीवन के पहले चन्द महीनों के दौरान क्या हुआ था।

पुनः मैं एक आमफ़हम विचार को रूप देने की चेष्टा कर रहा हूं यानी कि वयस्कों की अभिरुचियां और मान बहुत हद तक उनके बचपन के अनुभवों से प्रभावित होते हैं। यूनाइटेड स्टेट्स में रहने वाला कोई भारतीय डाक्टर करी को पसन्द कर सकता है क्योंकि जब वे भारत में बड़ा हो रहा था तो इसके लिए उसका स्वाद बन गया था, एक स्त्री हमेशा के लिए पुरुषों से डरेगी क्योंकि बच्चे के रूप में उसका यौन उत्पीड़न किया गया था।

प्रगतिशील व्यवहार को ग्रहण करते हुए आर्थिक दृष्टिकोण का विहितार्थ है कि माँ-बाप इस प्रभाव का पूर्वानुमान लगाने लगते हैं कि जब वयस्क होंगे तो बच्चों के साथ उनकी प्रवृतियों और व्यवहार के कारण क्या होगा?

इन प्रभावों से यह निर्धारित होता है कि माँ-बाप किस प्रकार देख-रेख उपलब्ध कराते हैं। उदाहरणार्थ, वृद्धावस्था सहायता के बारे में चिन्तित माँ-बाप अपने बच्चों के मन में दोष, आभार, कर्तव्य और संतानीय प्रेम की भावना बैठा सकते हैं जो अप्रत्याशित रूप से लेकिन प्रभावी रूप से बच्चों को उनकी सहायता करने के लिए वचनबद्ध बना सकते हैं।

वचनबद्धताओं पर अर्थशास्त्री बहुत ही संकीण संदर्श रखते हैं। अपनी तरजीहों को प्रभावित

करने के लिए दूसरों के अनुभवों को ''व्यवहार कौशल'' से प्रस्तुत करना अकुशल और अनिश्चितता से ओत-प्रोत लग सकता है लेकिन वचनबद्धता प्राप्त करने के लिए यह अत्यन्त प्रभावी तरीका है। यह जरूरी है कि आर्थिक सिद्धांत तरजीहों में दोष, प्रेम और संबंधित, अभिरुचियों का समावेश करें ताकि गहरी समझ प्राप्त हो सके कि वचनबद्धताएं कब ''विश्वसनीय'' हैं । माँ-बाप जो वसीयतें नहीं छोड़तें उन्हें अपने बच्चों में दोष भावना महसूस कराने के लिए तैयार रहना चाहिए, ठीक-ठीक इसलिए क्योंकि अधिक वृद्धावस्था उपभोग से वे अधिक उपयोगिता प्राप्त कर सकते हैं किसी बच्चों के उपभोग में समान कटौती से वे खोते हैं। वसीयत छोड़ने वाले परिवारों द्वारा सुझाए गए व्यवहार से, इस प्रकार का व्यवहार काफी हद तक बहुत आम हो सकता है क्योंकि युवा बच्चों वाले माँ-बाप बहुधा नहीं जानते कि वृद्ध होने पर वे क्या वित्तीय रूप से सुरक्षित होंगे। वे खराब स्वास्थ्य, बरोजगारी और वृद्धावस्था के अन्य जोखिमों से अपनी रक्षा करने की कोशिश कर सकते हैं और बच्चों में यह भावना डाल सकते है कि जरूरी हुआ तो वे सहायता देंगे।

बचपन के अनुभवों और वयस्क तरजीहों के बीच सम्बन्ध का यह विश्लेषण विवेकपूर्ण आदतों की रचना और व्यसनों पर काम से निकट संबंध रखता है (देखें बेकर और मरफ़ी, 1988)। तरजीहों की रचना इस भावना से युक्तिसंगत है कि बच्चों पर माँ-बाप द्वारा खर्च वयस्क रूझानों और व्यवहार पर बचपन के अनुभवों के प्रत्याशित प्रभावों पर आंशिक रूप से निर्भर होता है। मेरे पास समय नहीं है कि बच्चों के व्यवहार पर विचार कर सकूं जैसा कि शोर मचाना और ''चतुर'' लगना-जो आगे चल कर माँ-बाप के रूझानों को प्रभावित करने

की चेष्टा करता है।

मेरे सहित बहुत से अर्थशास्त्रियों ने परोपकार पर अत्यधिक निर्भर किया है ताकि परिवार सदस्यों के हितों को एक साथ बांधे रखा जाए। बचपन के अनुभवों और भावी व्यवहार के बीच संबंध की मान्यता इस जरूरत को घटा देती है कि परिवारों में परोपकारिता को आंशिक रूप से दोष, आभार, गुस्सा और अन्य प्रवृत्तियों से बदल देता है जिन्हें सामान्यत: युक्तिसंगत व्यवहार के मॉडलों द्वारा अनेदखा कर दिया जाता है।

यदि माँ-बाप प्रत्याशा करते हैं कि वृद्धावस्था में बच्चे सहायता करेंगे -शायद दोष या संबंधित प्रेरणाओं के कारण-ऐसे माँ-बाप जो अपने बच्चों से ज्यादा प्यार नहीं करते वे भी बच्चों की मानव पूंजी में अधिक निवेश करेंगे और वृद्धावस्था के गुज़ारे के लिए कम बचत करेंगे।

परिशिष्ट के समीकरण 12 में दिखाया गया है कि माँ-बाप अपने उपभोग में सदा छोटी वृद्धियां चाहते हैं ताकि उनके बच्चों की वृद्धियों के बराबर हो जाए यदि वे अधिक उपयोग प्राप्त कर सकते हैं तो उसके लिए केवल रास्ता यह है कि बच्चे अपने आपको दोषी महसूस करें। इसका अर्थ यह है कि परोपकारी माँ-बाप जो ऐसे कदम उठाते हैं कि बच्चों को महसूस कराया जाए कि वे दोषी हैं वे बच्चों की मानव पूंजी में सदा कम निवेश करते हैं। यह प्रत्यक्ष रूप से यह दिखाता है कि दोष उत्पन्न करने के लिए लागतें क्यों लगती हैं और यह पूरा कुशल नहीं है।

परोपकारी परिवार के प्रधान जो वसीयतें छोड़ कर जाने की योजना नहीं रखते वे अपने

परिवारों में एक ''गर्म'' वातावरण उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं ताकि सदस्य उनकी सहायता के लिए आगे आने के लिए इच्छुक हों । यह निष्कर्ष तथाकथित ''परिवार मानों'' की परिचर्चाओं के लिए संगत है, ऐसा विषय जिसपर यू.एस. में हाल ही के राष्ट्रपति चुनाव अभियान में ध्यान दिया गया। माँ-बाप बच्चों के मान निर्धारित किए जाने में सहायता करते हैं-जिसमें आभार कर्तव्य और प्रेम की भावनाएं भी शामिल होती हैं-लेकिन माँ-बाप वो करने की कोशिश करते हैं वे सार्वजनिक नीतियों, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों में परिवर्तनों से बहुत प्रभावित हो सकते हैं।

एक कार्यक्रम पर विचार करें जिसमें वृद्धों को संसाधन हस्तांतरण किए जाते हैं, शायद विशेषता बहुत गरीब परिवारों को जो वसीयतें नहीं छोड़ते, इससे बच्चों पर वृद्धों की निर्भरता कम हो जाएगी, पहले के विश्लेषण के अनुसार जिन माँ-बाप को वृद्ध होने पर सहायता की जरूरत नहीं होती वे इतनी कठिन मेहनत नहीं करते कि बच्चों को अधिक निष्ठावान या दोषी बनाया जाए या अपने माँ-बाप के प्रति वैसे ही भावना रखें। इसका अर्थ है कि सामाजिक सुरक्षा जैसे कार्यक्रम बहुत सहायता करते हैं कि वृद्ध लोग परिवार के सदस्यों को प्रोत्साहित करेंगे कि भावनात्मक रूप से अलग हो जाएं, संयोगवश नहीं बल्कि उन नीतियों के प्रति प्रतिक्रियाओं को बढ़ाकर।

आधुनिक विश्व में जिन अन्य परिवर्तनों ने परिवार मान को बदला है उनमें वर्धित भूगोलीय गतिशीलता, आर्थिक विकास के साथ आया ज्यादा धन, बेहतर पूंजी और वीजा बाजार, उच्चतर तलाक दरें, छोटे परिवार और सार्वजनिक निर्धारित स्वास्थ्य देख-रेख शामिल हैं।

इन विकासों के कारण सामान्यत: लोगों की हालत बेहतर हो गई है लेकिन इससे परिवारों के बीच पति-पत्नियों, माँ-बाप और बच्चों और दूरदराज़ के रिश्तेदारों के व्यक्तिगत संबंधों में कमजोरी आई है, यह आंरभिक रूप से निकट संबंध बनाने में निवेश के प्रोत्साहनों को कम करने से हुआ है।

6. अंतिम टिप्पणी

विशेष युक्तिसंगत पसन्द के परम्परागत विश्लेषण को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम यह है कि सिद्धांत में बहुत बढ़िया प्रवृतियों तरजीहों, और गणनाओं को शामिल किया जाए। जिन उदाहरणों पर मैं विचार करता हूँ उनमें यह उपाय प्रमुख है। भेदभाव के विश्लेषण में विशेष समूहों के सदस्यों जैसे अश्वेतों या महिलाओं के विरुद्ध पूर्वाग्रह तरजीहों में पसन्द न करना शामिल होता है। यह निर्णय लेते समय कि गैरकानूनी कार्यकलापों में लिप्त हों या नहीं, यह माना जाता है कि अपराधी लाभों और जोखिमों पर विचार करते हैं जिसमें पकडे ज़ाने की संभावना और सज़ा की कठोरता शामिल होती है। मानव पूंजी सिद्धांत में लोग युक्तिसंगत ढंग से लाभ और कार्यकलापों की लागतों जैसे शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य पर व्यय, प्रवास और आदतों का निर्माण और जिस ढंग से वे बदलती हैं का मूल्यांकन करते हैं। परिवार के लिए आर्थिक उपगमन में कल्पना की जाती है कि विवाह, तलाक और परिवार का आकार जैसे आन्तरिक निर्णय भी वैकल्पिक कार्यवहियों के लाभ और हानि को तोलते हुए किए जाते हैं। तरजीहों द्वारा तौल निर्धारित किए जाते हैं जो विवेचित रूप से परोपकारी और परिवार के सदस्यों के प्रति कर्तव्य और आभार की भावना पर निर्भर होते हैं।

चूंकि आर्थिक या युक्तियुक्त पसन्द, व्यवहार के प्रति पहुंच व्यक्तिगत निर्णयों के सिद्धांत पर निर्मित होती है, इस सिद्धांत की आलोचनाएं सामान्यत: विशेष धारणाओं पर संकेन्द्रित होती हैं कि ये निर्णय कैसे लिए जायें। अन्य बातों में, आलोचक इस बात से इनकार करते हैं कि व्यक्ति लगातार अधिसमय कार्य करते हैं और यह प्रश्न कि क्या व्यवहार अग्रगायी है, विशेषत: उन स्थितियों में जो अर्थशास्त्रियों द्वारा सामान्यत: सुविचारित स्थितियों से बहुत भिन्न होती है- ऐसे जिन में आपराधिक, व्यसनी परिवार और राजनीतिक व्यवहार शामिल होता है। इस स्थान पर आलोचनाओं का बयौरेवार उत्तर नहीं दिया जा सकता, इसलिए मैं केवल इस बात पर बल देता हूं कि तुलनात्मक सामान्यत: की कोई पहुंच अब तक विकसित नहीं हुई है जो युक्तियुक्त पसंद सिद्धांत के लिए गम्भीर प्रतिस्पर्धा प्रस्तुत कर सके।

जबकि व्यवहार के प्रति आर्थिक पहुंच व्यक्तिगत पसन्द के सिद्धांत पर विकसित होती है लेकिन यह व्यक्तियों से मुख्यत: संबंधित नहीं है। समूही या मैक्रो स्तर पर विवक्षाओं को प्राप्त करने के लिए यह एक शक्तिषाली औजार के रूप में सिद्धांत का प्रयोग माइक्रो स्तर पर करती है। युक्तियुक्त व्यक्तिगत पसन्द टेक्नोलोजी और अवसर, बाजार में सन्तुलन और शून्य बाजार स्थितियों, कानूनी मानकों और परम्पराओं के बारे में धारणाओं के साथ जुड़ी होती है ताकि समूहों के व्यवहार से संबंधित परिणाम प्राप्त किए जा सके। चूंकि सिद्धांत विवक्षाओं को मैक्रो स्तर पर प्राप्त करता है इसलिए यह नीति-निर्माताओं और जो देशों और संस्कृतियों के बीच अन्तरों का अध्ययन कर रहे हैं वे इसमें दिलचस्पी रखते हैं।

इस भाषण में जिन सिद्धांतों पर विचार किया गया है उनमें से किसी का भी ध्यान अत्यधिक सामान्यता की ओर है, इसकी बजाय प्रत्येक में यह कोशिश की गई है कि व्यवहार के बारे में ठोस विवक्षाएं प्राप्त की जाएं जिनकी परीक्षा सर्वेक्षण और अन्य डाटा के साथ की जा सकती है। क्या सजाएं अपराध को डराती हैं, क्या पुरुषों की तुलना में महिलाओं की कम कमाई मुख्यत: भेदभाव या कम मानव पूंजी के कारण है, या क्या शून्य-दोष तलाक कानून तलाकदरों को बढ़ाते हैं के बारे में विवाद-सभी व्यक्तिगत युक्तयुक्ता पर आधारित सिद्धांत से उत्पन्न पूर्वानुमान की अनुभव सिद्ध सम्बद्धता के बारे में प्रश्न खड़े करते हैं।

सैद्धांतिक और अनुभवसिद्ध अनुसन्धान दोनों को अनुपजाऊ होने से बचाता है। अनुभवसिद्ध अभिमुख सिद्धांत नए स्त्रोतों और डाटा के प्रकारों के विकास को प्रोत्साहित करते हैं कि मानव पूंजी सिद्धांत ने किस प्रकार सर्वेक्षण डाटा, विशेषत: पैनलों के प्रयोग को प्रेरित किया। उसी समय, उलझन में डालने वाले अनुभवसिद्ध परिणामों के कारण सिद्धांत में परिवर्तन किए जाते हैं क्योंकि परोपकार और परिवार तरजीहों के मॉडलों को सशक्त बनाया गया है ताकि इस निष्कर्ष का सामना कर सकें कि जानकार देशों में मां-बाप विभिन्न बच्चों में समान राशियों की वसीयत करने का रुझान रखते हैं।

मैं उत्साहित हूं कि कितने अर्थशास्त्री सामाजिक विषयों पर काम करना चाहते हैं बजाय उन विषयों पर जो अर्थशास्त्र के परम्परागत क्रोड हैं। उसी समय, क्षेत्रों से विशेषज्ञ जो सामाजिक प्रश्नों पर अवश्य विचार करते हैं वे बहुधा व्यक्तिगत युक्तिसंगतता की कल्पना द्वारा उपलब्ध

कराई विश्लेषणात्मक शक्ति के कारण मॉडलिंग व्यवहार के आर्थिक तरीके की ओर आकृष्ट होते हैं। युक्ति संगत पसन्द सिद्धांतवादियों और अनुभवसिद्ध अनुसन्धान कर्ताओं के उन्नतिशील स्कूल समाजशास्त्र, कानून, राजनीति विज्ञान, इतिहास, मानवविज्ञान और मनोविज्ञान में सक्रिय है। युक्तिसंगत पसन्द मॉडल अत्यधिक आशाजनक आधार उपलब्ध कराता है। युक्तिसंगत पसन्द मॉडल अत्यधिक आशाजनक आधार उपलब्ध कराता है। जो इस समय सामाजिक विज्ञानों के विद्वानों द्वारा सामाजिक जगत के विश्लेषण की एकीकृत पहुंच के लिए उपलब्ध है।

आभार कथन

मुझे जेम्स कोलमैन, रिचर्ड पोजनर, शेरविन रोज़ेन, राज साह, जोस सशंकमैन, रिचर्ड स्टर्न और स्टीफ़न स्टिगलर से मूल्यवान टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं।